# हम और हमारा आदर्श (तेजस्वी मन के सम्पादित अंश)

( 1 ) जो कुछ भी हम संसार में देखते हैं वह ऊर्जा का ही स्वरूप है । जैसा कि महर्षि अरविन्द ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के ही अंश हैं । इसलिए जब हमने यह जान लिया है कि आत्मा और पदार्थ दोनों ही अस्तित्व का हिस्सा हैं , वे एक – दूसरे से पूरा तादात्म्य रखे हुए हैं तो हमें यह एहसास भी होगा कि भौतिक पदार्थों की इच्छा रखना किसी भी दृष्टिकोण से शर्मनाक या गैर – आध्यात्मिक बात नहीं है ।

प्रश्न- ( i ) महर्षि अरविन्द ने क्या कहा है ?

उत्तर – महर्षि अरविन्द ने कहा है कि हम भी ऊर्जा के अंश है ।

( iii ) हम इस संसार में जो कुछ देखते हैं वह क्या है ?

उत्तर – हम इस संसार में जो कुछ देखते हैं , वह ऊर्जा का ही ' स्वरूप है ।

( iii ) ' अस्तित्व ' और ' तादात्म्य ' शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए ।

उत्तर – अस्तित्व – होना , मौजूदगी । तादात्मय – तल्लीनता/ एक हो जाना

( iv ) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर – कलाम जी भौतिकता और अध्यात्मिकता को न तो एक दूसरे का विरोधी मानते हैं न ही भौतिक मानसिकता को गलत । आत्मा व पदार्थ सभी का अस्तित्व है , दोनों परस्पर जुड़े हुए हैं अतः भौतिकता कोई बुरी चीज नहीं है ।

( v ) उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर – शीर्षक— हम और हमारा आदर्श | लेखक – डॉ ० ए ० पी ० जे ० अब्दुल कलाम ।

( 2 ) मैं यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक – दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है । उदाहरण के तौर पर , मैं खुद न्यूनतम वस्तुओं का भोग करते हुए जीवन बिता रहा हूँ , लेकिन मैं – सर्वत्र समृद्धि की कद्र करता हूँ , क्योंकि समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है , जो अन्ततः हमारी आजादी को बनाए रखने में सहायक हैं । आप अपने आस – पास देखेंगे तो पाएँगे कि खुद प्रकृति भी कोई काम आधे – अधूरे मन से नहीं करती । किसी बगीचे में जाइए । मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी । अथवा ऊपर की तरफ ही देखें , यह ब्रह्माण्ड आपको अनंत तक फैला दिखाई देगा , आपके यकीन से भी परे ।

प्रश्न- ( i ) समृद्धि और अध्यात्म के सम्बन्ध में लेखक क्या नहीं मानता ?

लेखक यह नहीं मानता कि समृद्धि और अध्यात्म एक दूसरे के विरोधी हैं या भौतिक वस्तुओं की इच्छा रखना कोई गलत सोच है ।

( ii ) समृद्धि अपने साथ क्या लाती है ?

उत्तर – समृद्धि अपने साथ सुरक्षा तथा विश्वास लाती है ।

( iii ) ‘ न्यूनतम ‘ और ‘ अनन्त ‘ का क्या अर्थ है ?

उत्तर – न्यूनतम का अर्थ कम से कम तथा अनन्त का अर्थ जिसका कोई अंत न हो.

( iv ) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए ।

उत्तर – कलाम जी कहते हैं कि प्रकृति समस्त कार्य समयानुसार करती है तथा पूरे मन के साथ. किसी बगीचे में जाइए मौसम में आपको फूलों की बहार देखने को मिलेगी ।

( v ) गद्यांश से सम्बन्धित पाठ का शीर्षक और उसके लेखक का नाम लिखिए ।

उत्तर – शीर्षक – हम और हमारा आदर्श लेखक- डॉ ० ए ० पी ० जे ० अब्दुल कलाम

( 3 ) मैं खासतौर से युवा छात्रों से ही क्यों मिलता हूँ ? इस सवाल का जवाब तलाशते हुए मैं अपने छात्र – जीवन के दिनों के बारे में सोचने लगा । रामेश्वरम् के द्वीप से बाहर निकल कर ' यह कितनी लम्बी यात्रा रही । पीछे मुड़कर देखता हूँ तो विश्वास नहीं होता । आखिर वह क्या था जिसके कारण यह संभव हो सका ? महत्वाकांक्षा ?

कई बातें मेरे दिमाग में आती हैं । मेरा ख्याल है कि सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह रही कि मैंने अपने योगदान के मुताबिक ही अपना मूल्य आँका । बुनियादी बात जो आपको समझनी चाहिए वह यह है कि आप जीवन की अच्छी चीजों को पाने का हक रखते हैं , उनका जो ईश्वर की दी हुई है ।

**(i) लेखक अपने छात्र जीवन के विषय में क्यों सोचने लगता है?**

**उत्तर:**

लेखक को युवा छात्रों से मिलना, उनसे बातें करना अत्यधिक रुचिकर लगता था। वह स्वयं की युवा छात्रों से मिलने की प्रवृत्ति पर प्रश्न अंकित करता है कि उसे यह क्यों अच्छा लगता है? और इसी प्रश्न का उत्तर ढूंढते हुए वह अपने छात्र जीवन के विषय में सोचने लगता है।

**(ii) लेखक के अनुसार मनुष्य जीवन में बड़ा बनने का मूल कारण क्या है?**

**उत्तर:**

कलाम जी के अनुसार, मनुष्य का जीवन में बड़ा बनने का मूल कारण उसकी महत्त्वाकांक्षा है। मनुष्य महत्त्वाकांक्षा के बल पर ही अपने जीवन में आगे बढ़ पाता है।

**(iii) किसी राष्ट्र के युवा कब तक राष्ट्र की उन्नति में अपनी भूमिका नहीं निभा सकते?**

**उत्तर:**

किसी राष्ट्र के नागरिकों, विशेष रूप से युवाओं व विद्यार्थियों में जब तक यह विश्वास नहीं होगा कि वे स्वयं विकसित राष्ट्र के नागरिक बनने के योग्य हैं, तब तक वे राष्ट्र के विकास एवं उन्नति में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका नहीं निभा सकते, क्योंकि राष्ट्र के विकास के लिए उन्हें स्वयं जिम्मेदारियों को उठाते हुए अपना योगदान देना होगा।

**(iv) लेखक के अनुसार विकसित देशों की समृद्धि के पीछे क्या तथ्य है?**

**उत्तर:**

लेखक के अनुसार विकसित देशों की समृद्धि के पीछे कोई रहस्य नहीं छिपा, अपितु इसके पीछे छिपा ऐतिहासिक तथ्य यह है कि इन देशों के नागरिक समृद्ध राष्ट्र में जीने का विश्वास रखते हैं।

**(v) 'महत्त्वाकांक्षा एवं विद्यार्थी शब्दों का सन्धि-विच्छेद करते हुए सन्धि का नाम भी लिखिए।**

**उत्तर:**

महत्त्व + आकांक्षा = महत्त्वाकांक्षा (दीर्घ सन्धि)

विद्या + अर्थी = विद्यार्थी (दीर्घ सन्धि)

**( iii ) कलाम जी के अनुसार मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा बनने का मूल कारण क्या है?**

**उत्तर – कलाम जी के अनुसार मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा बनने का मूल कारण उसकी महत्वाकांक्षा है । महत्वाकांक्षा का विशेष योगदान है ।**

**( iii ) पाठ का शीर्षक और लेखक का नाम लिखिए ।**

**उत्तर – शीर्षक- हम और हमारा आदर्श । लेखक – डॉ ० ए ० पी ० जे ० अब्दुल कलाम ।**